



हिंदी विभाग, इटर्नल विश्वविद्यालय  
एवं

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित  
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी  
भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी: हिमालयी लोकज्ञान के आयाम  
दिनांक-26 मई, 2026  
आमंत्रित अतिथि गण



प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल  
पूर्व कुलपति  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र



डॉ. जयंत उपाध्याय  
सह आचार्य  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र



डॉ. रोमसा शुक्ला  
सहायक प्रोफेसर  
श्यामलाल कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,  
नई दिल्ली



डॉ. हरीश पाण्डेय  
सहायक प्रोफेसर  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र



डॉ. साकेत बहुगुणा  
सहायक प्रोफेसर  
केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई  
दिल्ली केंद्र

विश्वविद्यालय ऑडिटोरियम, 26 मई, 2026  
प्रातः 10 बजे

आमंत्रण पत्र





ETERNAL  
UNIVERSITY

ETERNAL  
UNIVERSITY

हिंदी विभाग, इटर्नल विश्वविद्यालय  
एवं

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित  
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी  
भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी: हिमालयी लोकज्ञान के आयाम  
दिनांक-26 मई, 2026



ANK COLLEGE OF DIVINE  
MUSIC AND S HITHALISM



## विश्वविद्यालय के बारे में-

इटरनल विश्वविद्यालय, बरू साहिब (हिमाचल प्रदेश) एक बहुविषयी आवासीय विश्वविद्यालय (लड़कियों के लिए) है, जिसकी स्थापना उच्च शिक्षा को आध्यात्मिक मूल्यों, शोध और कौशल विकास से जोड़ने के उद्देश्य से की गई। विश्वविद्यालय में विभिन्न संकाय एवं विभाग क्रमबद्ध रूप से संचालित हैं। सर्वप्रथम अकाल कॉलेज ऑफ नर्सिंग स्वास्थ्य शिक्षा और सामुदायिक सेवा पर केंद्रित है। इसके बाद अकाल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी तकनीकी शिक्षा, नवाचार और प्रयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देता है। अकाल कॉलेज ऑफ एजुकेशन शिक्षक प्रशिक्षण एवं शैक्षिक शोध को विकसित करता है। अकाल कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर हिमालयी क्षेत्र की कृषि, जैविक खेती और किसान उन्मुख तकनीकों पर कार्य करता है। अकाल कॉलेज ऑफ बेसिक साइंसेज़ विज्ञान विषयों में आधारभूत शोध को प्रोत्साहित करता है। अकाल कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंसेज़ मानविकी और सामाजिक अध्ययन को बढ़ावा देता है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में अनुसंधान केंद्र, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और सामुदायिक विस्तार गतिविधियाँ भी संचालित हैं, जो समग्र शिक्षा का वातावरण प्रदान करती हैं।

## अकाल कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंसेज़ -

अकाल कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंसेज़, इटरनल विश्वविद्यालय का एक प्रमुख घटक महाविद्यालय है, जो मानविकी, भाषा, समाज और संस्कृति आधारित शिक्षा को समर्पित है। इस महाविद्यालय में हिंदी, अंग्रेज़ी, पंजाबी, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, तथा मनोविज्ञान जैसे विषयों का अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है। कॉलेज का उद्देश्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक संवेदनशीलता और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति जागरूकता विकसित करना है। यहाँ संगोष्ठी, कार्यशाला, शोध परियोजनाएँ और साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं। हिमालयी लोकज्ञान, भाषा संरक्षण और ग्रामीण समाज से जुड़े विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। महाविद्यालय विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं, शोध कार्य तथा सामाजिक नेतृत्व के लिए तैयार करता है। पुस्तकालय, स्मार्ट कक्षाएँ, अनुभवी प्राध्यापक और अकादमिक मार्गदर्शन इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस प्रकार यह महाविद्यालय शिक्षा, शोध और सामाजिक उत्तरदायित्व का संतुलित मंच प्रदान करता है।

## केंद्रीय हिंदी संस्थान -

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्थान है, जिसकी स्थापना हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, शिक्षण-प्रशिक्षण और शोध को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से की गई। संस्थान देश-विदेश के विद्यार्थियों, शिक्षकों और हिंदी प्रेमियों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएँ आयोजित करता है। यहाँ हिंदी शिक्षण की आधुनिक पद्धतियों, अनुवाद अध्ययन, भाषाविज्ञान, साहित्य और भारतीय संस्कृति से संबंधित शोध कार्य संचालित होते हैं। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र देश के विभिन्न शहरों में स्थापित हैं, जो स्थानीय स्तर पर हिंदी के विकास में योगदान देते हैं। विदेशी विद्यार्थियों के लिए विशेष हिंदी पाठ्यक्रम तथा भारतीय भाषाओं के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। संस्थान प्रकाशन कार्य के माध्यम से पाठ्यपुस्तकें, शब्दकोश और शोध ग्रंथ भी प्रकाशित करता है, जिससे हिंदी के मानकीकरण और प्रसार को बल मिलता है।





## हिंदी विभाग, इटर्नल विश्वविद्यालय एवं

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित  
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

**भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी: हिमालयी लोकज्ञान के आयाम**

26 मई, 2026

**भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी: हिमालयी लोकज्ञान के आयाम**

- स्थान: विश्वविद्यालय सभागार (ऑडिटोरियम)
- तिथि: 26 मई, 2026
- समय: सुबह 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक
- आयोजक: हिंदी विभाग

**उद्देश्य**

- भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्मरण
- हिमालयी लोकज्ञान के विविध आयामों का अध्ययन
- हिंदी के माध्यम से लोकज्ञान का प्रसार
- स्थानीय भाषाओं और संस्कृति के संरक्षण पर बल
- शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन

**मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट वक्ता**

भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय दर्शन विशेषज्ञ- प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

भाषा दर्शन विशेषज्ञ- डॉ. जयंत उपाध्याय

पारंपरिक अर्थव्यवस्था विशेषज्ञ- डॉ. रोमसा शुक्ला

शिक्षाविद- डॉ. हरीश पाण्डेय

## आयोजक



मुख्य संरक्षक  
**डॉ. बाबा देवेन्द्र सिंह**  
कुलाधिपति



संरक्षक  
**डॉ. नीलम कौर**  
कुलपति



प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल  
पूर्व कुलपति  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,  
वर्धा महाराष्ट्र



डॉ. जयंत उपाध्याय  
सह आचार्य  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय  
वर्धा, महाराष्ट्र



**डॉ. टी.एस. बेनीपाल**  
अधिष्ठाता अकादमिक  
इटरनल विश्वविद्यालय



**डॉ. साकेत बहुगुणा**  
सहायक प्रोफेसर  
केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली  
केंद्र



**डॉ रोमसा शुक्ला**  
सहायक प्रोफेसर  
श्यामलाल कालेज, दिल्ली  
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली



**डॉ. हरीश पाण्डेय**  
सहायक प्रोफेसर,  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय  
वर्धा, महाराष्ट्र



संयोजक  
**डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी**  
सहायक आचार्य,  
हिंदी विभाग, इटरनल  
विश्वविद्यालय



सह-संयोजक  
**श्री गुरतेज सिंह**  
सहायक आचार्य,  
पंजाबी विभाग, इटरनल  
विश्वविद्यालय

## अपेक्षित परिणाम

- हिमालयी लोकज्ञान का दस्तावेजीकरण
- हिंदी के माध्यम से प्रसार
- शोध एवं अकादमिक सहयोग को बढ़ावा
- स्थानीय भाषाओं और लोकसंस्कृति का संरक्षण
- नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव

## कार्यक्रम स्थल

दिनांक : 26 मई, 2026 समय : 10 बजे से विश्वविद्यालय परिसर (ऑफलाइन)



## परामर्श मंडल

प्रो.प्रभाशंकर शुक्ल, कुलपति नार्थ इस्टन हिल, विश्वविद्यालय सिलॉन्ग।  
प्रो.मनोज दीक्षित, कुलपति, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान।  
प्रो.बंश गोपाल सिंह, पूर्व कुलपति, पं.सुंदरलाल शर्मा विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।  
प्रो.गौरी त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग गुरुघासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।  
प्रो.बीरपाल यादव, अध्यक्ष हिंदी विभाग हरियाणा, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा।  
प्रो.धनजी प्रसाद, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।  
डॉ.ओम प्रकाश प्रजापति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश।  
डॉ.सौरभ कुमार, इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक, अमरकंटक।

## आयोजन समिति

डॉ. पूर्वी लूनीयल-अधिष्ठाता  
डॉ. जसमीत लांबा- अतिरिक्त अधिष्ठाता  
डॉ.अम्ब्रीश त्रिपाठी- संयोजक  
श्री गुरतेज सिंह-सह-संयोजक  
डॉ.नीलम कुमारी वर्मा-सदस्य  
डॉ.यशपाल आजाद-सदस्य  
डॉ.अंबिका शर्मा-सदस्य  
डॉ.दीपिका नेगी-सदस्य  
डॉ.गीता शर्मा-सदस्य  
डॉ.निवेदिता भारद्वाज-सदस्य  
डॉ.मनप्रीत बावा-सदस्य  
डॉ.बबली-सदस्य  
डॉ.सौरभ-सदस्य  
डॉ.रमेश -सदस्य  
सुश्री मनदीप-सदस्य

## तकनीक समिति

श्री सरबजीत सिंह +919882409397

संपर्क :

डॉ. अम्ब्रीश त्रिपाठी +91 63938 78100

श्री गुरतेज सिंह- +91 9815970468





## शोध पत्र आमंत्रण (राष्ट्रीय संगोष्ठी)

आदरणीय महोदय/महोदया,

इटरनल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के संयुक्त तत्वावधान में “भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी: हिमालयी लोकज्ञान के आयाम” विषय पर ऑफलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित किया जा रहा है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र के लोकज्ञान, लोकसंस्कृति, भाषा, साहित्य एवं परंपरागत जीवन-पद्धति को अकादमिक विमर्श के केंद्र में लाना है।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि उपर्युक्त विषय तथा उससे संबंधित निम्न संभावित उपविषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित शोध-पत्र प्रस्तुत करने का कष्ट करें।

### संभावित उपविषय

- भारतीय ज्ञान परंपरा : स्वरूप एवं परिप्रेक्ष्य
- भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी साहित्य
- हिमालयी लोकज्ञान की परंपरा और स्वरूप
- हिमालयी लोकभाषाएँ और हिंदी
- हिमालयी लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन
- हिमालयी लोककथाएँ, लोकगीत एवं लोकगाथाएँ
- हिमालयी क्षेत्र की लोकचिकित्सा परंपरा
- पर्यावरण संरक्षण में हिमालयी लोकज्ञान
- जनजातीय ज्ञान परंपरा और हिंदी
- भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा
- लोकज्ञान और आधुनिक संदर्भ
- हिमालयी लोककला और सांस्कृतिक विरासत
- लोक आस्था, रीति-रिवाज और परंपराएँ
- हिमालयी समाज में महिला और लोकज्ञान
- कृषि, पशुपालन एवं पारंपरिक आजीविका ज्ञान
- भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक परिप्रेक्ष्य
- अन्य संबंधित विषय

### शोध पत्र प्रस्तुतिकरण दिशा-निर्देश

- शोधपत्र मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए।
- भाषा: हिंदी (Unicode)
- शब्द सीमा: 3000-5000 शब्द
- फॉन्ट: Kokila आकार 14 (शीर्षक 16)
- सार: 200-250 शब्द एवं 4-5 कुंजी शब्द
- संदर्भ: मानक शोध पद्धति (APA/MLA)

### महत्वपूर्ण तिथियाँ

- सार भेजने की अंतिम तिथि: 30 अप्रैल 2026
- स्वीकृति सूचना: 05 मई 2026
- पूर्ण शोधपत्र भेजने की अंतिम तिथि: 10 मई 2026

- सेमिनार आयोजन तिथि: 26 मई 2026

- स्थल: इटरनल विश्वविद्यालय (ऑफलाइन)

शोधपत्र निम्न ईमेल पर भेजें: Email: [ambreeshtripathi@gmail.com](mailto:ambreeshtripathi@gmail.com), संपर्क: +916393878100

नोट: चयनित शोधपत्रों का प्रकाशन ISBN युक्त संपादित पुस्तक (Edited Book) में किया जाएगा।

प्रपत्र/शोधपत्र वाचन करने वाले प्रतिभागियों को नियमानुसार मानदेय देय होगा।

संयोजक- डॉ. अम्ब्रीश त्रिपाठी/ सहसंयोजक- श्री गुरतेज सिंह

हिंदी विभाग, इटरनल विश्वविद्यालय

